ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 93-95
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

आर्थिक विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 अजीत कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर– कृषि अर्थशास्त्र विभाग, श्री० मु० म० टा० पी० जी० कालेज, बलिया (उ0प्र0) भारत

Received-19.10.2023, Revised-25.10.2023, Accepted-30.10.2023 **E-mail: ajit737@gmail.com**

***सारांश:** मानव ने अपनी उत्पत्ति से लेकर आज तक की उड़ान में विकास और समृद्धि के अनेक सोपान चढ़े उतरे हैं, जैसे जीवित रहने से लेकर शारीरिक बौद्धिक विकास, जंगलों में पेड़ों पर रहकर जीवन गुजारने से लेकर बहुमंजलीय वातानुकूलित इमारतों में रहनें और पैदल चलने से लेकर यानों में यात्रा करने तक का मार्ग अनेक प्रकार की बाधाओं और उपलब्धियों से भरा रहा है। पर्यावरण और विकास की पारस्परिक निर्भरता सर्वविदित है, मानव जीवन का समूचा अस्तित्व पर्यावरण पर आधारित है, अर्थात् पर्यावरण जीवन का आधार है। एक कटु सत्य यह भी है कि अपने लिए सुख सुविधा, धन सम्पत्ति जुटाने के लिए मानव ने पर्यावरण के सभी घटकों को भारी क्षति पहुचॉयी है। परिणाम सामने है– जल प्रदूषित है, पी नहीं सकते। वायु प्रदूषित है, सांस नहीं ले सकते। मिट्टी प्रदूषित है, पर कुछ उत्पादित नहीं कर सकते। विकास जारी है, पर्यावरण मर रहा है। अतः मानव समाज के विकास की आवश्यकताओं को निश्चित सीमा में बांधना होगा ताँकि पर्यावरण संरक्षण और विकास एक दूसरे के पूरक सिद्ध हो सके। श्री मति इंदिरा गांधी ने कहा है, कि पर्यावरण संरक्षण में रूचि लेना एक भावुकता नहीं है बल्कि मनीशियों ने जिस सत्य की खोज की थी उसका पुनः आविश्कार करना हैं।*

***कुंजीभूत शब्द–** आर्थिक विकास, बहुमंजलीय वातानुकूलित इमारतों, पारस्परिक निर्भरता, मानव जीवन, अस्तित्व, पर्यावरण संरक्षण।*

आर्थिक विकास– आर्थिक विकास एक दीर्घकालीन, सतत्, गत्यात्मक तथा बहुआयामी प्रक्रिया है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में आर्थिक और गैर आर्थिक दोनों प्रकार के तत्वों का समावेष होता है। आर्थिक विकास में श्रम, पूंजी व तकनीक आदि उत्पादन के कारक एक दूसरे पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, जिससे उनकी पारस्परिक क्रिया प्रतिकिया के फलस्वरूप आय वृद्धि का क्रम आगे बढ़ता रहता है। आर्थिक विकास एक गुणात्मक संकल्पना है, इसमें आर्थिक विशमता में कमी आती है तथा जनता के जीवन स्तर एवं कल्याण में वृद्धि होती है। देश में उपलब्ध समस्त संसाधनों का कुशलतापूर्वक विदोहन होता है। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर व दीर्घकालीन वृद्धि होती है।

पर्यावरण– पर्यावरण शब्द परि + आवरण शब्दों से मिलकर बना हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ हमारें चारों ओर के आवरण या परिवेश से है अर्थात् हमारें चारों ओर का वातावरण। पर्यावरण में सब कुछ जो पृथ्वी पर दृश्य अदृश्य रूप में विद्यमान है। समाविश्ट होता है। यह पर्यावरण जल मंडल, थल मंडल तथा वायु मंडल से मिलकर बना है। पर्यावरण अनेक तत्वों का समूह है, जिसका आशय उन समस्त प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भौतिक परिस्थितियों से है, जो मानव को चारों ओर से न केवल घेरे रहती हैं, अपितु उसके जीवन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है और स्वयं भी मानव द्वारा प्रभावित होता है।

पर्यावरण संरक्षण– पर्यावरण संरक्षण से आशय पर्यावरणीय संसाधनों के संवर्धन एवं परिरक्षण से है। पर्यावरण संरक्षण संसाधनों का ऐसा नियोजन और प्रबंधन है, जिससे उनके बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग और सतत् आपूर्ति की जा सकें, जबकि उनकी गुणवत्ता, मूल्य को बनाए रखते हुए संबर्धन किया जाए। यह संसाधन चाहे मानवकृत हो या प्राकृतिक। अतः भूमि, वायु, जल, खनिजों एवं प्राकृतिक संसाधनों का सावधानी पूर्वक उपयोग ही पर्यावरण संरक्षण है। पर्यावरण को प्रमुख रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

प्राकृतिक पर्यावरण– इसके अंतर्गत वायु, भूमि, पानी, खनिज, पर्वत, नदियां, वनस्पति तथा जीव जन्तु आदि आते है।

मानव निर्मित पर्यावरण– इसके अंतर्गत गांव, शहर, औद्योगिक प्रतिष्ठान, भवन, सड़कें, नहरें, वानिकी, कृषि भूमि आदि शामिल है।

सामाजिक पर्यावरण– इसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश, भवन, सड़कें, नहरें, वानिकी, कृषि भूमि आदि शामिल है।

आर्थिक विकास का पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव– मनुश्य हमेशा से अनुसंधानप्रिय रहा है। अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण उसने पत्थर का कोयला इसके बाद डीजल, कैरोसीन जैसे तरल ईंधन को खोज लिया तथा धीरे–धीरे चूल्हें, अंगीठी की जगह स्टोव ने ले ली, जिससे भोजन आसानी से तथा जल्दी पक जाता था। हालांकी पत्थर के कोयले से कार्बन–डाई–ऑक्साइड जैसी गैसों के उत्सर्जन में कमी नहीं आई, परन्तु इसके चलते ईंधन के लिए पेंड़ों की कटाई पर कुछ रोक जरूर लगी। लेकिन अनुसंधान रूपी रथ यहीं नहीं रूका और उसने एल. पी. जी., एल. एन. जी., विद्युत हीटर, माइक्रोवेव, सोलर कुकर जैसी चीजें खोज ली, जिससे न केवल भोजन जल्दी तैयार हो जाता है, अपितु प्रदूषण पर भी कारगर लगाम लगी।

कल्पना करें कि यदि आज बिजली, एल.पी.जी., एल.एन.जी. वस्तुओं का आविष्कार न हुआ होता, तो क्या हमारे जंगल देश की 123 करोड़ जनसंख्या की ईंधन की जरूरत को पूरा कर पाते? माना कर भी लेते, तो आखिर कब तक? 2010 में स्पेन में मैड्रिड शहर मेंआयोजित 'वर्ल्ड एलपीजी फोरम' की बैठक में प्रस्तुत आंकड़ों के मुताबिक अमरीका, चीन और जापान के बाद भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा एलपीजी उपभोक्ता है। भारत में 115 मिलियन से अधिक गैस कनेक्शन है और हर साल तकरीबन 900 मिलियन गैस सिलेंडरों की आपूर्ति होती है। अगर गैस से इतने अधिक चूल्हें/भट्टियां न जल रही होती। भारत की 123 करोड़ की आबादी को निवास के के लिए अधिक जमीन की जरूरत होती। अतः सीमेंट,सरिया, कंक्रीट, फाइबर जैसे पदार्थो के निर्माण की फैक्ट्रियां छत, लेंटर, गेट तथा

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक आवश्यकता को पूरा करती है। यदि ऐसा न होता तो अब तक न जाने कितनी लकड़ियां स्वाहा तथा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

न जाने कितने वन उजड़ चुके होते और न जाने कितना प्रदूषण आसमान को आच्छादित कर चुका होता।

मशीनीकरण और उससे होने वाला फायदा केवल किचन या घर की चारदीवारी तक सीमित न था, बल्कि आर्थिक विकास के द्वारा अन्य क्षेत्रों में भी तकनीक के नित नए प्रयोगों से पर्यावरण को होने वाले नुकसान में कमी आई है। रेल गाड़ियां जो पहले कोयले के इंजन के कारण अनाप–शनाप कार्बन उगलती थी, वे भी डीजल इंजन से होते हुए, अब विद्युत इंजन के नए रूप में अवतरित हुई है जो कि पहले के इंजन की अपेक्षा पावरफुल तो है ही, साथ ही इससे वायुमंडल में भी प्रदूषण नहीं फैलता तथा अबं कई जगहों पर डीजल के स्थान पर सी. एन. जी. के चलन में आने से न केवल ध्वनि व वायु प्रदूषण से निजात मिली, अपितु यात्रा में समय व श्रम की भी बचत हुई। इसके अलावा पहले सर्दियों से बचाव के लिए टनों लकड़ियां जला दी जाती थी, पर अब यह भूमिका हीटर, गीजर बखूबी निभा रहे है।

आधुनिक युग में आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका सूचना प्रौद्योगिकी की है तथा इसका आधार है कम्प्यूटर, जो कि वर्तमान समय में मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है, जिसके अंतर्गत अभिलेखों का डिजिटलाइजेशन एवं ईमेल, फेक्स, वीडियों कांफ्रेसिंग जैसी आधुनिक तकनीकों से न केवल लोगों के भौतिक गतिविधियों में कमी आई है, वरन् कागज की खपत में कमी, साथ ही अभिलेखों को रखने की जगह में भी कमी आई।

इस प्रकार जैसे–जैसे किसी देश का आर्थिक विकास होता है, वैसे–वैसे नई–नई मशीनों एवं तकनीक ईजाद होती है, जो किफायती और पर्यावरण के लिए तुलनात्मक रूप से हितैशी भी होती है।

आर्थिक विकास का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव– आर्थिक विकास के फलस्वरूप औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनों का विनाश, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है। आधुनिकता और विकास की अंधी दौड़ में मानव द्वारा किए गए कार्य एक ओर तो आर्थिक, सामाजिक विकास के प्रतीक है, परन्तु दूसरी ओर पर्यावरण के लिए आत्मघाती सिद्ध हुए। भारत में कृषि भूमि, आवास, उद्योग, परिवहन आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वनों का विनाश किया गया परिणामस्वरूप भारत की जैव विविधता, वायुमंडल में ग्रीन हाउस प्रभाव उत्पन्न करने वाली गैसों की मात्रा में निरन्तर वृद्धि, भू क्षरण, हिमस्खलन, अनावृष्टि, बाढ़, वन्य प्राणियों का ह्रास आदि पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुई है।

Cloro Floro Carban (C.F.C.) के निर्माण से रेफ्रिजरेटर्स, अग्नि शामक यंत्रों, वातानुकूलित यंत्रों, प्लास्टिक होम, फास्ट फूड कार्टन्स और अन्य आरामदेय वस्तुओं के निर्माण में एक क्रांति सी आ गई किंतु 1973 में कैलिफोर्निया विष्वविद्यालय के वैज्ञानिक शेरी रोलेण्ड और मारियो मोलिना ने सी. एफ. सी. को ओजोन विनाशक बताया। उन्होनें बताया कि क्लोरीन ओजोन से क्रिया करके क्लोरीन मोनो आक्साइड बनाती है, जो ओजोन को नष्ट कर देती है।

हरित क्रांति के बाद कृषि क्षेत्र में मानव का हस्तक्षेप अधिक बढ़ा है। " Indian Society of Agricultural Economics" द्वारा मुम्बई में आयोजित सम्मेलन में H. S. Bal, Indrapal Singh, Vijay वैज्ञानिको ने बताया कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से भूमिगत जल के प्रदूषण में अप्रत्याशित वृद्धि हुई।

वर्तमान समय में यातायात के साधनों के विकास में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वाहनों के धुएं में पाए जाने वाले तथा स्वास्थ्य के लिए घातक कार्बन मोनो आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड, हाइड्रो कार्बन आदि गैसें श्वास के माध्यम से शरीर में पहुँचकर उसे खोखला कर रहे है। वायु प्रदूषण से सुस्ती, ऑखों में जलन, त्वचा में रूखापन, थकान, याददाश्त की कमी, फेफड़ों में इन्फेक्शन आदि बीमारियां फैल रही है।

घरेलू एवं औद्योगिक कचरें के पर्यावरण में मिलने से मृदा प्रदूषण हुआ है। घरो से निकला कचरा, रासायनिक खाद के निर्माण में जुटी औद्योगिक इकाइयां, कागज मिल, कपड़ा उद्योग, चमड़ा उद्योग, लौह अयस्क कारखाने, तेल शोधन संयंत्र, कीटनाशक निर्माण की इकाइयां आदि भारी मात्रा में प्रदूषित जल एवं अवशिष्ट पदार्थ उत्पन्न करती है।

बाँध परियोजना को सिचांई, औद्योगिक विकास, सूखा नियंत्रण आदि की दृष्टि से लाभकारी माना गया। भारत में भाखड़ा नांगल बाँध, हीराकुंड बाँध, रिहन्द बाँध, कोयला बाँध आदि बाँधों को विकास एवं उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निर्मित किया गया, लेकिन विकास के साथ साथ इनके निर्माण से जैव विविधता, प्रभावित लोगों का पुर्नवास, जल जन्य बीमारी में वृद्धि, वन विनाष आदि समस्या उत्पन्न होती है।

वर्तमान समय में उच्च क्षमता के ध्वनि विस्तारक यंत्र, लाउड स्पीकर, ऑडियो–वीडियो सिस्टम, टेलीविजन, डिस्कोथेक, वाहनों की बढ़ती संख्या, जनरेटर आदि ने ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा दिया है। ध्वनि प्रदूषण से श्रवण शक्ति का ह्रास, वार्तालाप एवं नींद में व्यवधान, रक्तचाप में वृद्धि, बहरापन आदि की समस्या उत्पन्न होती है।

वर्तमान समय में रेल, बस, षादी, पार्टी, किसी भी समारोह आदि में खाने पीने का सामान जैसे चाय, कॉफी, भोजन आदि पॉलिथिन या प्लास्टिक द्वारा निर्मित थाली/प्लेट, कप, डिस्पोजल में दिया जाता है तथा दुकानों पर छोटी से छोटी एवं बड़ी से बड़ी वस्तु पॉलिथिन बैग में मिलता है, जो कि न तो नष्ट होती है और न ही इनका सड़ना गलना संभव है तथा इसे जलाने से विशाक्त व जहरीली गैस उत्पन्न होती है।

पर्यावरण संरक्षण हेतु किए गए प्रयास– वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है, क्योंकि आर्थिक विकास के फलस्वरूप औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनों का विनाश, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन से पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया। पर्यावरणीय समस्याएं विश्वव्यापी है, जिन्हें दूर करने के लिए पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है। अतः पर्यावरण संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित उपाय किए गए।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

पर्यावरण संरक्षण के अंतर्राष्ट्रीय प्रयास

वर्ष	सम्मेलन / समझौता
1946	अंतर्राश्ट्रीय व्हेल सम्मेलन
1972	मानव पर्यावरण पर संयुक्त राश्ट्र सम्मेलन
1980	टोरण्टो वर्ल्ड कॉन्फ्रेन्स
1985	ओजोन परत संरक्षण सम्मेलन,वियाना
1987	ओजोन परत संरक्षण पर मॉण्ट्रियल समझौता
1992	जैव विविधता पर नागरिक सम्मेलन
1992	पृथ्वी बचाओ सम्मेलन– रियो डि जेनेरो, ब्राजील
1997	पृथ्वी बचाओ सम्मेलन
2004	जैव सुरक्षा / कार्टाजिना प्रोटोकाल

भारत में पर्यावरण संरक्षण सम्बंधी अन्य उपाय– भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय संरक्षण नीति और पर्यावरण विकास नीति 1992 बनाई गई।

भारत ने 18 मई 1994 जैव विविधता सम्बंधी संधि का समर्थन किया। इस संधि का प्रमुख उद्देश्य जैव विविधता का संरक्षण, घटकों का निरन्तर प्रयोग, आनुवांशिक संसाधनों से प्राप्त लाभ का उचित व समतापूर्ण बंटवारा आदि शामिल है।

जैव विविधता विधेयक 2002 में पारित हुआ, जिसका उद्देश्य देश की प्रचुर जैव विविधता का संरक्षण एवं इसका विदेशी संगठनों व लोगों को एक पक्षीय इस्तेमाल से तथा जैव पायरेसी को रोकना है।

1978 में नई दिल्ली में स्थापित राष्ट्रीय प्राकृतिक संग्रहालय का कार्य पर्यावरण व संरक्षण के क्षेत्र में अनौपचारिक शिक्षा को बढ़ावा देना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। प्राकृतिक संसाधन और उनका उचित उपयोग ही देष को विकसित तथा अनुचित उपयोग उसे अल्प विकसित, अर्थात आर्थिक विकास, औद्योगीकरण और मशीनीकरण से पर्यावरण की रक्षा भी होती है साथ ही तकनीकी विकास को भी बढ़ावा मिला है। परिणामस्वरूप आधुनिक तकनीकों से न केवल लोगों के भौतिक गतिविधियों में कमी आई है, वरन समय व श्रम की भी बचत हुई।

इसके विपरीत मानव की कृषि भूमि, आवास, उद्योग, परिवहन आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हो रहा है। परिणामस्वरूप जल प्रदूषण, वायु, ध्वनि, मृदा प्रदूषण, ओजोन क्षरण, जैव विविधता जैसी समस्याएं उत्पन्न हो गई है, साथ ही जनसंख्या वृद्धि के कारण खाद्यान्न आपूर्ति, आवास, रोजगार, नगरीकरण, औद्योगीकरण आदि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जाता है, जिससे पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होता है। यदि संसाधनों का विवेकपूर्ण चयन करते हुए उपयोग करें, तो आर्थिक विकास पर्यावरण का दुश्मन कदापि नहीं हो सकता। विकासरूपी इंजन के लिए ऊर्जा के ऐसे स्त्रोतों की तलाश करनी चाहिए, जो न केवल पर्यावरण हितैशी हों, बल्कि ऊर्जा के अक्षय स्त्रोत भी हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खन्ना, आशा, श्रीवास्तव आर. के., प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं पर्यावरण प्रदूषण, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. रावत, ज्ञानेन्द्र, 2006, पर्यावरण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, विश्वविद्यालय पब्लिकेशन।
3. कलवार, एस. सी. 2007, पर्यावरण संरक्षण, पोइन्टर पब्लिकेशन जयपुर।
4. झिंगन, एम. एल. 1983, विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
5. जैन, एच. सी. 2000, पर्यावरण, संचार, शिक्षा एवं प्रबंधन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
6. योजना मासिक पत्रिका।
7. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका।
8. ग्राम विकास ज्योति मासिक पत्रिका।
9. बैकिंग चिंतन अनुचिंतन मासिक पत्रिका।

*****